

श्री [illegible] नं ६

त्रिकाल-देववन्दन विधि

सामायिक पौषध विधि [illegible]

—संग्राहक—

रतनचन्द कोचर

[illegible]

[illegible], उदयपुर।

श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला,

उदयपुर।

[illegible]

[illegible]

दो शब्द

ग्रन्थमाला की तरफ से "त्रिकाल देव वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि सहित" नामक पुस्तक भाई श्री रतनचन्दजी कोचर द्वारा संग्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्ण रूप से लिखी गई है जिससे प्रत्येक सज्जन जिसको क्रिया विधि का सही ज्ञान नहीं हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम कई दिन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियंत्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक की अधिक से अधिक कापियां छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से फिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे है। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जल्दी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को संग्रह करने का श्रेय श्री भाई रतनचन्दजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् वाडीलाल जीवराज शाह पालनपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिसके लिये दोनों सज्जन हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने "आनन्द प्रेस" में इसको छापने और उसके प्रूफ संशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते है। हमें आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनवृन्द लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियों का पूर्ण ध्यान रखते हुए भी दृष्टि दोष से या प्रमादवश कोई भूल चूक रह गई हो उनको सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। विनीत—

प्रबन्धक—श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला, जयपुर।

❋ प्रस्तावना ❋

सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभीष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिनिधानाय, श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

इस "त्रिकाल देववन्दन विधि—सामायिक पौषध विधि सहित" नाम की पुस्तिका "श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला" जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह बड़े हर्ष की बात है। जो व्यक्ति विधि विधान के लिये रुचि तो रखता है लेकिन अनपठित होने के कारण या सूत्रों के विस्मृत होने के कारण क्रिया नहीं कर सकता उसके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं।

गुजरात सौराष्ट्र में ऐसी पुस्तकें गुजराती भाषा में दखी जाती हैं किन्तु वे गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये ऐसी पुस्तिका की अत्यन्त आवश्यकता थी ये कमी अब इस "ग्रन्थमाला" की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूर्ण हो जायगी।

आगे से तो इस जड़वाद के जमाने में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिरुचि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है। जो क्रिया कर रहे हैं वे क्रिया का मर्म विशेष कम समझते हैं। परिणाम यह होता है कि क्रिया रस-वृत्ति ज्यादा देखने में नहीं आती। आज तो एकान्त ज्ञान को

मानने वाले या एकान्त क्रियाकांडी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है। महान पूर्वधर श्रीमद् उमास्वातिवाचक "तत्वार्थ सूत्र" में फरमाते हैं कि—

सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः—

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः—जैसे समुद्र में तरने का ज्ञान तो है किन्तु हाथ पांव नहीं हिलाने से वह कभी पार उतर सकता है ? तात्पर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है।

मेरा ख्याल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये ऐसी प्रस्तावना क्यों ? लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति एकान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया रुचि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिज्ञ हैं उनके लिये ऐसी पुस्तिका सहायतारूप होगी। ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये "श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला" और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूं।

वि० सं० २००७ आसाढ़ दूजा
शुक्ल पंचमी गुरुवार
ता० २० जुलाई सन १९५०

भवदीय—
वाडीलाल जीवराज शाह,
पालनपुर (गुजरात)

ॐ अनुक्रमणिका ॐ

विषय	पृष्ठ
सामायिक लेने की विधि	१
सामायिक पारने की विधि	५
पौषध विधि	६
पाऊण पोरिसी की विधि	२१
गुरु वंदन	२३
देव दर्शन विधि	३१
पच्चक्खाण पारने की विधि	४१
पौषध में इरियावही करने की विधि	४७
पौषध में पगार (मात्रा या स्थंडिल)-जाने की विधि	४८
सिर्फ रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि	४६
सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और- पीछे आठ पहर का पौषध लेने की विधि	४६
पिछले पहर की पडिलेहण करने की विधि	५०
सथारा पोरिसी पढाने की विधि	५७
आठ पहर के तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि	६५
दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि	६६
देववन्दन विधि	७०
सत्रह भिगारा सज्झाय	८६

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	११	समभल	समभाल
३५	१२	अतिरसाल	अतिहिरसाल
३५	१४	अभितर	अभ्यंतर
३५	१५	घणीयुं	घडीयुं
३५	१७	सभी	सवि
३५	१८	पोख	पोप
३६	२०	सिद्धाए	सद्धाए
३८	१६	धम्मतितिथियरे	धम्मतित्थयरे
४१	१६	धम्मतितिथियरे	धम्मतित्थयरे
६३	२	अंतरंत	अतरंत
६४	५	मम	मह
६७	४	पारेमि	पारूं
६७	७	पारिअं	पायुं
६८	७	पारेमि	पारूं
६८	१०	पारिअं	पायुं
७३	६	कवल	कवड
८७	१४	पंचम	पंचमी
९०	१	विरोधी	विराधी
९१	१	नीमा	नियमा
९२	८	जन	जिन

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	५	जावाजीव	जावजी
६३	१२	आठम	आठम ने
६८	६	उलठ	उलट
६८	२१	कभर	करभ
१००	७	नचे	नाचे
१०३	१३	अमृतदश	अप्लदश
१०४	१०	भल्ली	मल्ली
१०५	४	सथारे	संथारो
१०५	६	परिहगी	परिहारी
१०५	८	परिहरीए	निसरीए
१०५	१३	दमामा	ददामा
१०६	५	विकसत	विकमत
१०७	११	सांनिध्य	सानिध्य
१०७	१६	गल	मंगल
१०७	२१	सुरुम	स्वरूप

शुद्धिपत्रम् के अलावा निम्न लिखी बातों को ध्यान मे रखें—

१—आचार्य प्रमुख की स्थापना होने से नवकार पचिंदिय की स्थापना करने की जरूरत नहीं।

२—पौषध लेने की क्रिया खड़े होकर करनी चाहिये।

३—पडिलेहण में मुँहपत्ति के ५० बोल, चरवला का १०, आसन का २५ कदोरे का १०, धोती का २५ और शेष वस्त्रों का २५,

३ मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यात्वशल्य परिहरूं।

डावे कंधे पर प्रतिलेखना करते:—

२ क्रोध, मान परिहरूं।

और जीमणे कंधे पर:—

२ माया, लोभ परिहरूं।

फिर मुंहपति नाभि नीचे नहीं लेजानी जिमसे चरवले से प्रति लेखना करनी उसमें डावे घुटने पर:—

३ पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, की जयणा करूं।

और जीमणे घुटने पर:—

३ वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय की रक्षा करूं।

साधू व श्रावक ५० बोल गिने और साध्वी व श्राविका ३ लेश्या, ३ शल्य और ४ कषाय छोड़कर बाकी ४० बोल गिने।





❀ श्री वीतरागाय नम ❀

त्रिकाल–देववन्दन विधि

(सामायिक पौषध विधि सहित)

(अथ सामायिक लेने की विधि)

श्रावक श्राविका सामायिक लेने मे पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुख के आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के सन्मुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताण। नमो सिद्धाण। नमो आयरियाण। नमो उवज्झायाण। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाण च सव्वेसि। पढम हवइ मंगलं ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो । चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिंदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं ?"इच्छं"। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे 'इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ऐसे बोलकर 'करेमि भंते' स्वयं उच्चरे यदि गुरु या वडील हो तो वे उच्चरावै]

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

[पीछे]

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमास-मणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहु ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करु ? "इच्छं"

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर तीन नवकार गुणना]

॥ इति सामायिक लेनेकी विधि संपूर्ण ॥

सामायिक लेने के बाद स्वाध्याय तथा नवकारवाली स्तवन आदि में समय व्यतीत करे, अथवा प्रतिक्रमण करे। ४८ मिनिट पूर्ण होने के बाद सामायिक पारे।

— ❀ —

★ अथ सामायिक पारने की विधि ★

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

कित्तइस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियंपयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायियं पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए

मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअं पारिअं ' तहत्ति '

(ऐसे कहकर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र पढकर 'सामायिअवयजुत्तो' सूत्र पढे)—

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिअवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो। छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैंने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमें जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

दस मनके, दस वचनके, बारह काया के ये कुल बत्तीस दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति सामायिक पारनेकी विधि संमाप्ता ॥

(पौषध विधि)

जो श्रावक श्राविका पौषध करना चाहें उनको सुबह राई प्रतिक्रमण करना चाहिये, पौषध करने में इस प्रकार वस्त्रादि उपकरण होने चाहिये — मुहपत्ति, चरवला, ऊनी आसन, शुद्ध धोती, उत्तरासन, मात्रा के लिये जाते समय पहनने की धोती, नाक साफ करने का रूमाल या गेडिया, सिर व बदन पर ओढने के लिये कम्बल, सथारिया—सोने के लिये, डडासण, गरम पानी, लगा चूना पानी में डालने के लिए, सोते वक्त दोनो कानों के छेदों में जीव जतु की यतना के लिए कुडल यानी रूई के फोवे।

श्रावक श्राविका पौषध लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार-वाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के सम्मुख करके नवकारमंत्र पढे।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥१॥ पंच महव्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिंदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोषध मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना-)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पोषध संदिसाहुँ ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पौषध ठाऊं "इच्छं"

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार नीचे मुजब गिनना।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्व पावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे 'इच्छकारी भगवन् पसाय करी पौषध दंडक उच्चरावोजी ऐसे बोलकर निम्न पोसह दंडक स्वयं उच्चरे यदि गुरु या वडील हो तो वे उच्चरावें]

"करेमि भंते ! पोसहं, आहार-पोसहं देसओ सव्वओ, सरीरसकार-पोसहं सव्वओ, बंभचेर-पोसहं सव्वओ, अव्वावार-पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहे ठामि। जावदिवसं[1]

---

१ सिर्फ दिनका पौषध करना हो तो 'जावदिवसं" दिन रात का करना हो तो 'जाव अहोरत्तं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जावसेसदिवसं अहोरत्तं' कहना चाहिये।

पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं न करेमि, न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ?"इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे 'इच्छकारी भगवन पसाय करी सामायिक दंडक उचरावोजी' ऐसे बोलकर 'करेमि भंते' स्वयं उचरें यदि गुरु या बडील हो तो वे उचरावें]

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

[पीछे]

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणो संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणो ठाउं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय करुं ? "इच्छं"

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर तीन नवकार गुणना]

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुवेलं*

---

* यदि पौषध में राई प्रतिक्रमण करे तो अड्ढाईज्जेसु सूत्र पढने के पूर्व दो खमासमण देकर बहुवेलं संदिसाहूं और बहुवेलं करेसि, का आदेश ले ।

वदिमाहूँ ? "इच्छं" इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! वहुवेल करेमि ? "इच्छं"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छा कारेण संदिसह भगवन् पडिलेहण करूं ? "इच्छं"

पीछे मुहपत्ति, चरवला, आसन, कदोरा, (सूत की आगडी) और धोती, ये पांच चीजें पडिलहे। पीछे पडिलहना की हुई धोती पहिन ले और उसके बाद— पुनः खमासमण देकर

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं। इच्छामि पडिकमिउं, इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

- (पीछे खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? "इच्छं"

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की पडिलेहना करे। पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं"

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि संदिसाहुँ ? "इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? "इच्छं"

कहकर प्रथम पडिलेहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्टा) मात्रा (पेशाब) करने जानेका वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो तो संथारिया, कम्बल वगैरह वस्त्र पडिलहे । पीछे डंडासण लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

णाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग–पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबो-हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

बाद में तीन जगह "अणुजाणह जस्सुग्गहो" कह काजा परठवना (डालना) और "वोसिरे" तीन दफे कह फिर पहिले की जगह आकर मन्दिर का देव वंदन करना सो इसी पुस्तक में है। बाद में जब डेढ़ घड़ी दिन चढ़े तब पडिलेहण पोरिसी पढ़े।

पडिलेहण-पोरिसी की विधि

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडि-पुण्णा पोरिसी ? इच्छं

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं,

हणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना. काउस्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च

चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्ज च । विमलमणत च जिणं, धम्म संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइ मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं"

(मुहपत्ति पडिलेहकर नीचे मुजब द्वादशावर्त वन्दना करे)

सुगुरुवंदना सूत्रं

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे राइअवइक्कंतो ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, ज

किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे, राइअवइक्कंतो ? जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ।

तिरहं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पचण्हमणुव्वयाण, तिण्हं गुणव्वयाण, चउण्हं सिक्खावयाण बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खडिअं ज विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! "इच्छ" तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥

(पन्यास आदि पदस्थ हो तो ऊपर मुजब दो दफे वादणा देना और पदस्थ न हो तो एक खमासमण देकर)

इच्छामि खमासमणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि । "इच्छकारि सुहराइ सुखतप शरीर निराबाध सुखसयम यात्रा निर्वहते होजी । स्वामी साता हैजी भात पाणी का लाभ देनाजी ।"

इच्छामि खमासमणो ! वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥

खमासमण देकर खडा होवे और दोनों हाथ जोडकर —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइय* खामेउ ? "इच्छ खामेमि राइय" जंकिंचि अपत्तिअं, परपत्तिअ भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे

---

*यारा वजे पीछे जहा "राइय" बोलना लिखा है वहा "देवसि" बोलना !

सूरे उग्गए, अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं: अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं। पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुंट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा वोसिरइ।

चउव्विहार उपवास–पच्चक्खाण

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ। चउव्विहंपि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को जरूर जाना चाहिये। इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना, उत्तरासण करना, चरवला दायीं वगल में और मुंहपत्ति दाहिने हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो कमली ओढ़ना, और उपाश्रय (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीनवार "आवस्सहि" कहके मौन पने इरियासमिति (जीवजंतु) देखते हुए श्री जिन मन्दिरजी मे जावे। वहां तीन वार "निसीहि" कह करके। मूल नायकजी के सम्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रदक्षिणा देवे! पीछे रंग मंडप मे प्रवेश कर दर्शन, स्तुति करे—

॥ दर्शन स्तुति ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥१॥
दर्शनाद् दुरितध्वंसी, वन्दनाद् वाञ्छितप्रदः ।
पूजनात् पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात् सुरद्रुमः ॥२॥
त्रिजग नायक तुं धणी, मही मोटो महाराज,
महोटे पुण्ये पामियो, तुम दरिसण हुं आज ॥३॥
आज मनोरथ सवि फल्या, प्रगट्या पुण्यकल्लोल,
पाप कर्म दूरे टल्या, नाठा दुःख दंदोल ॥४॥
ज्ञानावरणीय क्षय करी, दर्शनावरणीय कर्म,
वेदनीय कर्म दूरे करी, टाल्यु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय–

वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

(इस प्रकार तीन खमासमण देकर—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? "इच्छं"

सकलकुशलवल्लि, पुष्करावर्तमेघो ॥
दुरिततिमिरभानुः, कल्प-वृक्षोपमानः ॥१॥
भवजलनिधिपोतः सर्व सम्पत्ति हेतुः ॥
स भवतु सततं वः श्रेयसे शान्तिनाथः
—श्रेयसे पार्श्वनाथः ॥२॥

॥ चैत्यवन्दन ॥

आज देव अरिहन्त नमूं, समरु तोरा नाम ।
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥१॥
शत्रुञ्जय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार ।
तारगे श्री अजितनाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥२॥
अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चोवीसी जोय ।
मणिमय मूरति मानञ्ज, भरते भरावी सोय ॥३॥

समेत शिखर तीरथ बड़ा, ज्यां वीसे जिन पाय ।
वैभारक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥
मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास ।
ऋषभ कहे जिन समरतां, पंहुचे मन की आस ॥५॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, वोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं; विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं वोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले । संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइ ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

श्री ऋषभदेवजी का स्तवन ।

जग जीवन जग वहालो हो, मारु देवीनो नंदलाल रे।
मुख दीठे सुख ऊपजे, दर्शन अति ही आणंद लालरे ॥१॥
आंखडी अंबुज पांखडी, अष्टमी शशी समभाल लालरे।
वदन ते शारद चंदलो, वाणी अतिरसाल लालरे ॥२॥
लक्षण अंगे विराजता, अडहीय सहस उदार लालरे।
रेखा कर चरणा दिके, अभिंतर नहीं पार लालरे ॥३॥
इंद्र चन्द्र रवि गिरितणा, गुण लइ घडीयुं अंग लालरे।
भाग्य किहां थकी आवीयुं, अचिरज एह उत्तंग लालरे ॥४॥
गुण सघला अंगे कर्या, दूर कर्या सभी दोष लालरे।
वाचक जश विजये थुण्यो, देजो सुखनो पोख लालरे ॥५॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंत,

कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि निआण बंधणं वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-लाभ वत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सिद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कह कर थुइ कहना)—

आदि जिनवर राया जास सोवन काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जगत स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरिराया मोक्ष नगरी सिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के सन्मुख पचक्खाण करना, पीछे जिन मन्दिर जी से निकलते हुवे तीन दफे "आवस्सहि" कहना और उपाश्रय मे तीन दफे "निसीहि" कह कर प्रवेश करना और १०० पावंडे भूमि से आगे गया हो तो इरियावहि करके—

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ?

इच्छाकारेण सदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-

हुई होय, ते सविहुं मन वचन काया ए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

(इसके पश्चात दोपहर में देववंदन करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सज्झाय न बोले। देववंदन अकाल में (११॥ वजे से १२॥ वजे तक) न करें। यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १५ से कार्तिक सुदी १४ तक) मे दोपहर के देव-वंदन से पहिले भूमि प्रमार्जन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन वार पहिले भूमि प्रमार्जन करना चाहिए। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें।

पच्चक्खाण पारने की विधि

एगासण, एकलठाणा, आयंबील, आदि तिविहार उपवास के व्रत का पच्चक्खाण पारना होतो निम्न प्रकार से क्रिया करे। परन्तु मध्याह्न का देववन्दन करके पच्चक्खाण पारे।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्-मामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उतिंग–पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-

दिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विसोहिकरणेण, विसल्लीकरणेण, पावाण कम्माण निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएण, नीससिएण, खासिएण, छीएण, जंभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताण भगवंताण, नमुक्कारेण न पारेमि ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पह सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंत च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमि-

जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

(खमासमण देकर—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? "इच्छं"

जगचिंतामणि चैत्यवंदन

जगचिन्तामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण, अट्ठावयसंठवियरूव, कम्मट्ठविणासण, चउवीसंपि जिणवर जयन्तु, अप्पडिहय-सासणं ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ। नव-कोडिहिं केवलीण, कोडीसहस्स नव साहु गम्मइ। संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुकोडिहिं वरनाण, समणह कोडी-सहस दुअ, थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जित पहु नेमिजिण, जयउ वीर सचउरिमंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहु दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागयसपइअ वंदु जिण सव्वेवि ॥३॥ सत्ताणउइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ। बत्तिसय बासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥४॥ पनरस कोडिसयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना। छत्तीस सहस असिइं (असिआइ), सासयबिंबाइ पणमामि ॥५॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइ सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनाम-

धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥
जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले।
संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-
आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं
तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर-
विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं,
कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा
जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि
बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं
॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ
महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्जबोहिं,
भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ

भयव ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाण बंधणं वीयराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूँ ?" ' इच्छं"

(एक नवकार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

फिर मन्नह जिणाणं सज्झाय निम्न प्रकार से कहना—

अथ मन्नह जिणाणं सज्झाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।

मूंह पूंछ कर (प्रमार्जन कर) हो सके जब तक मुनि महाराज को वोहरा कर निश्चल (स्थिर) आसन से मौन रख आहार करना, अँठा नहीं डालना और थाली धोकर पीना, बगैर कारण स्वादिष्ट आहार और लविंगादि तांबुल (मुखवास) न लेना और मुख शुद्ध कर दिवस चरिम तिविहार का पञ्चक्खाण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौकरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार ऊपर लिखि विधि से पौषधशाला में ही करे और फिर बाद पौषधशाला में आकर "इरियावहि पडिक्कम" कर (सो पावंडे हों तो गमणागमणे आलोय कर) पुनः जगचिंतामणि का चैत्यवंदन जयवीयराय तक करना।

पोषध में पेशाब (मात्रा वा स्थंडिल) जाने की विधि।

पेशाब व पाखाने जाने के वक्त पहनने को धोती पहनना, कामली का काल हो तो सिर व बदन पर कामली ओढनी, मुंहपत्ति कंदोरे मे रखनी, चरवला डावी बगल में रखना, रात का वक्त हो तो दंडासन से इरियासमिति सोधते चलना। पेशाब करना हो तो कूंडी पूंजकर उसमें पेशाब कर परठवने (पेशाब जमीन पर डालने) की जगह कूंडी रखनी, निर्जीव जगह देख "अणुजाणह जस्सुगो" कह कर पेशाब जमीन पर डालना, फिर कूंडी नीचे रख तीन दफे "वोसिरे" कहना और कूंडी अचित्त जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना।

पाखाने जाना हो तो निर्जीव जगह देख "अणुजाणह

जरसुगो" कहकर पाखाने जाना और शुद्धि करके तीन दफे "वोसिरे" कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पाखाने की शंका दिनही को निवारण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पाखाने जाने मे जीव जंतु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पड़े तो १०० हाथ जगह के अंदर जाना, धोती बदलने बाद इरियावहि पडिक्कमना।

सिर्फ रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि।

रात्रि के चार पहर का पोषध लेने वालों को पडिलेहण और देववंदन की क्रिया दिन में ही करने की है जिससे पौषध जल्दी शुरु करना चाहिये। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ६ वें से आरम्भ होकर पृष्ठ १४ की ३ पंक्ति तक (बहुवेल करेमि ? "इच्छं" तक) दिया है उसके अनुसार कर के बाद में शाम के पडिलेहण में इच्छामि० खमासमण देकर "पडिलहण करूं ? इच्छं" से शुरु करे। उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिछल पहर को पडिलेहण करने की विधि" मे है, उसके अनुसार करें।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—
आठ पहर का पौषध लेने की विधि।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोयकर, फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ १० की ७ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ १४ की ३ पंक्ति तक (बहुवेल करेमि ? "इच्छं" तक) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु "सज्झाय

करूं" की जगह "सज्झाय मे हूँ" कहना और तीन नवकार की जगह १ नवकार गिनना। फिर बाद में शाम के पडिलेहण में "इच्छामि० खमासमण देकर "पडिलेहण करूं ? "इच्छं" से शुरु करे। उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में है। उसके अनुसार करे।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि।

(मुनिराज ने स्थापनाचार्य की पडिलेहण की हो उसके सामने छः घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना, स्थापनाचार्य की पडिलेहण किये पहिले पडिलेहण नहीं होती।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? "इच्छं"

(पुनः खमासमण देकर इसी पुस्तक के पृष्ठ ३७ के १८ वीं पंक्ति से प्रारम्भ करके पृष्ठ ४० की २ पंक्ति तक ("गमणागमणे" आलोय तक) दिया है उसके अनुसार क्रिया करे। पीछे:—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पडिलेहण करूं ? "इच्छं"

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोषधशाला प्रमाजूं ? "इच्छं"

(कह उपवास वाले को मुहपत्ति, चरवला, आसन, पडिलेहना और एकासणादि करने वाले को कटोरा (सूत की तागडी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके खमासमण देकर इरियावहि पडिक्कम करके)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहियाए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पमाय करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी ? "इच्छ"

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किसी बडे के उत्तरासन की पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छ"

ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूँ ?" "इच्छं"

एक नवकार पढ़कर "मन्नह जिणाण" की सज्झाय उकडू बैठ (खड़े घुटने बैठ) कर कहना ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।

नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अथ मन्नह जिणाणं सज्झाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।
छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥
पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।
सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥
जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥

(फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्त्त वन्दना देवे, इसी पुस्तक के पृष्ठ २५ की १५ वीं पंक्ति से प्रारम्भ होकर पृष्ठ २६ की १६ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें। और तिविहार उपवास वाला सिर्फ खमासमण दे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसायकरी पच्चक्खाण का आदेश दीजियेजी ।

ऐसा कहकर पाणहार का पच्चक्खाण करे ।॰

पाणहार–पच्चक्खाण

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ । 'अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं,' सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि संदिसाहुं ? "इच्छं" । इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुं ? "इच्छं"

कहकर प्रथम पडिलेहन मे बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट) मात्रा (पेशाब) करने जाने का वस्त्र और रात्रि–पौषध करना हो तो सथारिया, कम्बल वगैरह वस्त्र पडिलेहे । पीछे डंडासण लेकर पडिलेहण करके फिर खमासमण देकर इरियावहि पडिक्कम करके कुडा कचरा निकाले उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ वीं

॰चउव्विहार–उपवास किया हो तो इस वक्त पच्चक्खाण करने की जरूरत नहीं है, परन्तु सुबह तिविहार का पच्चक्खाण किया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चउव्विहार–उपवास का पच्चक्खाण करे । उसका पच्चक्खाण इस पुस्तक के पृष्ठ ३० में दिया है ।

पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें। पीछे देववंदन करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ हैं इस समय भी सज्झाय न बोले। जिसने आठ पहर का पोसह लिया हो या जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देववंदन करके पीछे कुण्डल (कान में डालने के लिये रूई), डंडासन और रात्रि की शुचि के लिए चूना डाला हुआ अचित पानी याचना करके लेवे। पीछे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उतिंग–पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहताण भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते कित्तइस्स, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वदे, सभवमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पहं सुपास, जिण च चदप्पहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणत च जिणं, धम्मं सतिं च वदामि ॥३॥ कुथु अर च मल्लिं, वदे मुणिसुव्वय नमिजिण च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥ एव मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तिय-वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसतु ॥७॥

(खमासमण देकर—)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! थंडिल पडिलेहुँ ? "इच्छं"

ऐसा कहकर नीचे लिखे अनुसार चौवीस मांडले करें।

ये मंडल रात्रि में बड़ी नीति लघुनीति (पाखाना, पेशाब) वगैरा परठवने लायक जगह देखने (प्रति लेखन करने) के लिये हैं,

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिआसे।
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे।
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहिआसे।
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहिआसे।
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहिआसे।
६ आघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे।

संथारा के पास की जगह इस माफिक छः मंडल करना:—

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहिआसे।
२ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे।
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे।
४ आघाडे मज्झे पासवणे अहिआसे।
५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिआसे।
६ आघाडे दूरे पासवणे अहिआसे।

उपासरे के बारने के अन्दर की तरफ इस माफिक छः मंडल करना:—

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिआसे।
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे।

३ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
४ अणाघाडे मज्झे पासवणे अणहिआसे ।
५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
६ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे ।

उपाश्रय के द्वारने के बाहर नजदीक रहकर छ मंडल करना —

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
२ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहिआसे ।
३ अणाघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
४ अणाघाडे मज्झे पासवणे अहिआसे ।
५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
६ अणाघाडे दूरे पासवणे अहिआसे ।

उपाश्रय से सौ हाथ के अन्दाज दूर रहकर छ मंडल करना —

इन मंडलों वाली जगह पहले से ही देख रखनी और मंडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर दृष्टी का उपयोग (ध्यान) रखना।

२४ मंडल करने के बाद इरियावहि पडिक्कम कर चैत्यवन्दन के साथ देवसी या पाक्खिकादि (पक्खी वगैरा) प्रतिक्रमण करे ।

संथारा पोरिसी पढाने की विधि

यदि रात्रि-पौषध हो तो पडिक्कमण करने के बाद संथारा पोरिसी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-चर्चा वगैरह करे । पीछे

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? तहत्ति;

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्‌ अरिहंताणं भगवंताणं, नमुका-

रेण न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंत, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबो-हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी, राइयसंथारए ठामि ? "इच्छं"

ये कहकर चउक्कसाय का चैत्यवन्दन करें—

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणा लिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

(यहां दोनों हाथ जोड़कर जय वीयराय कहना)

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि नियाणबंधणं वीयराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खक्खओ कम्मक्खओ,

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! राइय-संथारा सूत्र पढने के निमित्त मुहपत्ति पडिलेहुँ ? "इच्छं" ऐसा कहकर मुंहपत्ति पडिलेहण कर संथारा पोरिसि का पाठ पढे ।

निसीहि, निसीहि, निसीहि, नमो खमासमणाणं गोयमाईणं महामुणीणं ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुकारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव पोसहं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

(अनुक्रम से ये तीनों पाठ तीन दफे बोलना ।)

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा
बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसंथारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह सथ(?)ग, नाहनहाखेण वामपासेण ।
कुक्कुडिपायपसारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥
मफोडय मंडामा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ।
द्व्वाईउवयोग ऊसासनिरुभणालोए ॥ ३ ॥
जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ।
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, सिद्धा मगलं, साहूमंगल, केवलिपन्नतो धम्मो मगलं ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि सरण पवज्जामि—अरिहते सरण पवज्जामि, सिद्धे सरण पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलीपन्नत्त धम्मं सरण पवज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाइवायमलिय, चोरिक्क मेहुण दविणमुच्छं ।
कोह माण माय, लोहं पिज्ज तहा दोस ॥ ८ ॥
कलहं अब्भक्खाण, पेसुन्न रइ-अरइ-समाउत्त ।
परपरिवाय माया-मोसं मिच्छत्तसल्ल च ॥ ९ ॥
वोसिरसु इमाइ मुक्खमग्गसंसग्गविग्घभूयाइं ।
दुग्गइनिबधणाइं, अट्ठारस पावठाणाइ ॥१०॥
एगोऽहं नत्थि मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सइ ।
एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासइ ॥११॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥१२॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरो ।
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥
अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिनपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥

(यह १४ वीं गाथा तीन वार कहे, पीछे सात नवकार गुण कर नीचे की तीन गाथा कहे)

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवनिकाय ।
सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥
सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।
ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥१६॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं ।
जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१७॥इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के वाद जब तक निद्रा न आवे तब तक स्वाध्याय ध्यान करे, संथारा दूसरे श्रावक के संथारे से कम से कम एक बेंत छेटी (एक बिलात दूर) बिछाना। बाद मे रात्रि के आखरी प्रहर में उठकर राई प्रतिक्रमण करना और सुबह स्थापनाचार्य जी का पडिलेहण और इरियावहि करने के बाद वस्त्र आदि का पडिलेहण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १५ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ वीं पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें। बाद देववंदन, सज्झाय

करें वह पुस्तक में आगे दिया हुआ है। देव दर्शन, गुरु वंदन करके मांगे हुये डंडासण, कुंडी, पानी वगैरा गृहस्थ को वापिस संभलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना।

आठ पहर के तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिले ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना-पीछे खमासमण देना-)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पोसह पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! पोसह पारिय 'तहत्ति'

(कहकर दाहिने हाथको चरवले पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र बोल फिर "सागर चन्दो" की पोषध पारने की गाथा कहे —

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण। नमो आयरियाण। नमो उवज्झायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाण च सव्वेसिं । पढम हवइ मंगल ॥

"सागर चन्दो कामो, चन्दवडिसो सुदसणो धन्नो ।
जेसिं पोसह पडिमा, अखडिआ जीवियंते वि ॥१॥
धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणद कामदेवा य ।
जास पससइ भयव, दढव्वयत्त महावीरो ॥२॥

पोसह विधि से लिया विधि से पारा विधि करते जो कोई अविधि हुई हो वह सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना–)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअं पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थए वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिअं पारिअं 'तहत्ति'

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले पर रखकर मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र पढकर 'सामायिअवयजुत्तो' सूत्र पढे)—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिअवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो । छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअजत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमे जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुकड़ ।

दस मनके, दस वचनके, बारह काया के ये कुल बत्तीस दोषोंमे से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुकड़ ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवसी या पाक्षिकादि (पक्खी वगैरा) प्रतिक्रमण करने के बाद पौषध पारने के पहिले मागे हुए डंडासण कुंडी, पानी वगैरा गृहस्थ को वापिस सभलवा देना पीछे खमासमण देकर इरियावहि करके चउक्साय चैत्यवन्दन करे, उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ५८ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६० की ३ री पंक्ति तक (जैन जयति शासनम् ॥५॥ तक) दिया है उसके अनुसार करें। बाद में खमासमण देकर पौषध पारने की मुहपत्ति पडिलेहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के पृष्ठ ६६ की १६ वीं पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार पारें।

❀ इति पोषध विधि समाप्त ❀





❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

❀ त्रिकाल-देववन्दन विधि ❀

(अथ देववन्दन)

देववंदन करने वाले श्रावक श्राविका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन बिछाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकारमंत्र पढें।

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेरगुत्तिधरो। चउविहकसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो॥१॥पंच मह-

ग्यजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो। पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पचिंदिय कहे, यदि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पचिंदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओठाण संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबो-हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

(अब उत्तरासन डालकर खमासण कर चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ? "इच्छं"

❀ चैत्यवन्दन ❀

श्री शत्रुञ्जय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।
भाव धरी ने जे चढ़े, तेने भव पार उतारे ॥१॥
अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय ।
पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभुपाय ॥२॥
सुरज कुंड सोहामणो, कवलजक्षअभिराम ।
नाभिराय कुल मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, वियट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर थुइ कहना—

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं, संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं । पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-क्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट कल्लाणकंद की दूसरी थुइ नीचे लिखे अनुसार कहना)

अपारससारसमुद्दपारं, पत्ता सिवं दितु सुइक्कसारं। सव्वे जिणिंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम तिमिर-पडल-विद्धं सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आइगराणं तित्थ-यराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्म-दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछ-उमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं । जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं-आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर थुइ कहना—

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजीए,
मनवछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ नीचे लिखे अनुसार कहना)

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनीला;
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचन वर्ण लह्या ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय-विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धं सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,

धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमाय ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्स-ब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकारका काउस्सग्ग तीसरी थुइ कहना)

आगम ते जिनवर भाखियो, गणधर ते हैंडे राखियो, तेनो रस जेणे चाखियो, ते हुओ शिवसुख साखियो ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि

देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर चौथी थुइ कहना)

धरणीधरराय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणां गुण गावती;
सहु संघना संकट चूरती, नय विमलनां वंछित पूरती ॥४॥

नमुत्थुण अरिहंताणं भगवंताण ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुडरीआणं, पुरिसवरगन्धहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपज्जोअगराण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण, सरणदयाण, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसिआण, धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधरोण, वियट्टछउमाण ॥७॥ जिणाण जावयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाणं बोहयाण, मुत्ताणं मोअगाण ॥८॥ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेय, ठाण संपत्ताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥९॥ जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सतिणागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं। आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं। पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि निआण बंधणं वीअराय तुह समए। तह वि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ। संपज्जउ महएअं, तुहनाह

जिणपूआ जिणथुणणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।
ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥
उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।
धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥
संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।
सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥



॥ श्री पर्युषण पर्व का चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्प विहार ।
चार मासांतर स्थिर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥
आषाढ शुद चौदश थकी, संवत्सरी पचास ।
मुनिवर दिन सीत्तेरमे, पडिक्कमतां चउमास ॥ २ ॥
श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ।
कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एकतान ॥ ३ ॥
जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल ।
प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ॥ ४ ॥
दर्पणथी निज रूपनो, जुए सुदृष्टि रूप ।
दर्पण अनुभव अर्पणा, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥
आतमस्वरूप विलोकतां, प्रगट्यो मित्र स्वभाव ।
राय उदायी खामणां, पर्व पर्यूषण दाव ॥ ६ ॥
नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा ।

पंचमी दिन वाचे सुणे, होय चिरोवी नीमा ॥ ७ ॥
ए नहीं पर्वे पंचमी, सर्व समाणी चोथे ।
भवभीरु मुनि मानशे, भाख्यु अरिहा नाथे ॥ ८ ॥
श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अवतार ।
श्री शुभ वीरने शासने, पाम्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीश स्थानक तप चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहंत नमु, बीजे सर्व सिद्ध ।
त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥
नमो [1]थेराण पाचमे, [2]पाठक गुण छट्ठे ।
नमो लोए सव्व साहूण, जे छे गुण गरिट्ठे ॥ २ ॥
नमो नाणस्स आठमे, दर्शन पद ध्यावो ।
विनय करो गुणवंतनो, चारित्र मन भावो ॥ ३ ॥
नमो बंभवय धारिण तेरमे किरियाण ।
नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाण ॥ ४ ॥
[3]चारित्र [4]नाण [5]सुयस्सने ए, नमो तित्थस्स जाणी ।
जिन उत्तम पद पद्मने, नमता होय सुख खाणी ॥ ५ ॥

॥ दूज तिथिका चैत्यवन्दन ॥

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा अभिनंदन ।
बीजे जन्म्या ते प्रभु, भव दुःख निकंदन ॥ १ ॥

---

१ स्थविर । २ उपाध्याय । ३ संयम । ४ ज्ञान । ५ श्रुतज्ञान, अथवा श्रुत-सिद्धात, जो ४५ आगम है ।

दुविध ध्यान तमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ।
इम प्रकाश्यु सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥
दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीये ।
मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये ॥ ३ ॥
जीवाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण ।
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलज्ञान ॥ ४ ॥
निश्चय ने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीये ।
अरजिन बीज दिने चवी, एम जन आगल कहीये ॥ ५ ॥
वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ।
बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥
एम अनंत चोवीशीए, हुआं बहु कल्याण ।
जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ पंचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ।
त्रिकरणशु त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥
आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली ।
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ।
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥
ज्ञान रहित क्रिया कही, काम कुसुम उपमान ।
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी श्वासोश्वासमा, करे कर्मनो छेह ।
पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥
देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ।
ज्ञान तणो महिमा घणो, अग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥
पच मास लघु पचमी, जावाजीव उत्कृष्टी ।
पंच वरस पच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥
एकावन ही पचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ।
उजमणु करो भावशुं, टालो भव फेरो ॥ ८ ॥
एणी परे पचमी आराधीए, आणी भाव अपार ।
वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ६ ॥

॥ श्री अष्टमी चैत्यवन्दन ॥

माह शुदी आठम दिने, विजया सुत जायो ।
तेम फागण शुदि आठमे, सभव चवी आव्यो ॥ १ ॥
चैत्र वदिनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिनद ।
दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥
माधव शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर ।
अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या सुख भरपूर ॥ ३ ॥
एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिनद ।
आठ जाति कलशे करी, नवरावे सुर इद ॥ ४ ॥
जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी ।
नेम अषाड शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥
श्रावण वदनी आठमे, नमि जन्म्या जग भाण ।

तेम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनु निरवाण ॥ ६ ॥
भाद्रवा वदी आठम दिने, चवियास्वामी सुपास ।
जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैत्यवन्दन ॥

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ।
संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥
माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ ।
इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥
एकादशसो चउ गुणा, तेहनो परिवार ।
वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥
जीवादिक संशय हरी, एकादश गणधार ।
वीरे थाप्या वंदीये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥
मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ।
ऋषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनाशी ॥५॥
पद्मप्रभ शिव वास पास, भव–भवना तोडी ।
एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सघली जोडी ॥ ६ ॥
दश क्षेत्रे त्रिहुँ कालनां, त्रणसें कल्याण ।
वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥
अगीयार अंग लखावीये, एकादश पाठां ।
पुंजणी ठवणी वींटणी, मषी कागल ने काठां ॥ ८ ॥
अगीयार अव्रत छांडवां ए, वहो पडिमा अगीयार ।

क्षमाविजय जिनशासने, सफल करो अवतार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचक्रजी का चैत्यवन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना, गुण गायो नित्ये ।
बीजे सिद्ध तणा घणा, समरो एक चित्ते ॥ १ ॥
आचारज त्रीजे पदे, प्रणमो बिहुँ कर जोडी ।
नमीये श्रीउवझायने, चोथे मद मोडी ॥ २ ॥
पंचम पद सब साधुनुं, नमता न आणो लाज ।
ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥
दसण-शंकादिक रहित, पद छट्ठे धारो ।
सर्व नाण पद सातमे, क्षण एक न विसारो ॥ ४ ॥
चारित्र चोखुं चित्तथी, पद अष्टम जपीये ।
सकल भेद बीच दान-फल, तप नवमे तपीये ॥ ५ ॥
ए सिद्धचक्र आराधता, पूरे वंछित कोड ।
सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे कर जोड ॥ ६ ॥

॥ दीवाली का चैत्यवन्दन ॥

सिद्धारथ नृप कुल-तिलो, त्रिशला जस मात ।
हरि लछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ १ ॥
त्रीश वरस गृहवास छंडी, लिये संयम भार ।
बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥ २ ॥
त्रीश वरस इम सवि मली, बहोंतेर आयु प्रमाण ।
दीवाली दिन शिव गया, नय कहे ते गुण खाण ॥ ३ ॥

॥ श्री पर्युषण पर्व का स्तवन ॥

सुणजो साजन संत पजुसण आव्यांरे, तमे पुन्य करो पुन्यवंतः
भविक मन भाव्यांरे, (आंकणी)

वीर जिणेसर अति अलवेसर,वाहाला मारा परमेश्वर एम बोलेरे
पर्व मांहे पजुसण महोटां, अवर न आवे तस तोलेरे;
पजुसण आव्यां रे, तमे० १

चउपद मांहें जेम केसरि मोटो, वा० खगमां गरुड कहीए रे;
नदी मांहे जेम गंगा महोटी, नगमां मेरु लहीए रे, प० २

भूपतिमां भरतेसर भाख्यो, वा० देवमांहे सुर इन्द्र रे;
तीरथमाँ शेत्रुञ्जो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चन्द्र रे; प० ३

दशरा दीवाली ने वली होली, वा० अखात्रीज दीवासो रे;
वलेव प्रमुख बहुलां छे वीजां, पण नहीं मुक्तिनो वासोरे प० ४

ते माटे तमे अमर पलावो, वा० अट्ठाइ महोत्सव कीजे रे;
अट्ठम तप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे; प० ५

ढोल ददामा भेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र ने जगावो रे;
झांझरनां झमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवोरे; प० ६

सोना रूपाने फूलडे वधावो, वा० कल्पसूत्रने पूजो रे;
नव वखाण विधिए सांभलतां, पाप मेवासी ध्रूजे रे; प० ७

एम अट्ठाईनो महोत्सव करतां वा० बहु जीव जग उद्धरियारे;
विबुध विमलवर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि
वरियारे; प० ८

॥ श्री दूज तिथिका स्तवन ॥

जीरे मारे प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी; जीरे मारे बीज तिथि गुणगेह, आदरो भवियण सुन्दर जी ॥१॥ जीरे मारे एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणोजी । जी० मा० महा शुदि बीजे जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी ॥२॥ जी० श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी । जी० तारण भवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥३॥ जी० समेतशिखर शुभ ठाम, दसमा शीतल जिन गणु' जी । जी० चैत्र वदिनी हो बीज, पर्या मुक्ति तस सुख घणु' जी ॥४॥ जी० फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी । जी० अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षये भव पासनीजी ॥५॥ जी० उत्तम माह ज मास, शुदि बीजे वासुपूज्यनो जी । जी० एहीज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥६॥ जी० करणीरूप करो खेत, समकितरूप रोपो तीहाजी । जी० खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहांनी ॥७॥ जी० उपशम तद्रूप नीर, समकित छोड प्रगट होवे जी । जी० संतोष करी अहो वाड, पच्चख्खाण व्रत चोकी सोहे जी ॥८॥ जी० नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी । जी० मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥९॥ जी० शात सुधारस नीर, पान करी सुख लीजिये जी । जी० तंबोल

सम ल्गो स्वाद, जीवने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥ जी० बीज करो दोय मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी । जी० चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥११॥ जी० आवश्यक दोय वार पडिलेहण दोय लीजिये जी । जी० देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए कीजिये जी ॥१२॥ जी० उजमणुं शुभ चित्त, करी धरिये संयोगथी जी । जी० जिनवाणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगथी जी ॥१३॥ जी० इण विधि करिये हो बीज, राग ने द्वेष दूरे करी जी । जी० केवलपद लही तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी । जी० पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥१५॥

॥ ज्ञानपंचमी का स्तवन ॥

सुत सिद्धारथ भूपनो रे, सिद्धारथ भगवान । बारह परखदा आगले रे, भाखे श्री वर्धमानो रे; भवियण चित्त धरो, मन वच काय अमायो रे; ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी॥१॥ गुण अनन्त आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय । तेहमां पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दरसण होय रे; भ०॥२॥ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय । ज्ञाने थिविरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे; भ०॥३॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिन करम करे नाश । वह्नि जेम इन्धन दहे रे,

क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे, भ० ॥४॥ प्रथम ज्ञान पछी दया रे, संवर मोह विनाश। गुण ठाणंग पग थालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे, भ०॥५॥ मइ सुअ ओहि मणपज्जवा रे पंचम केवलज्ञान। चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर, प्रकाश निदानो रे; भ० ॥६॥ तेहना साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि। लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे; भ०॥७॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, भणता करे अंतराय। अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पागला थाय रे, भ० ॥८॥ भणवा गुणवा न आवडे रे, न मले वल्लभ चीज। गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे, भ० ॥९॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग-गुरु पाय। गुणमंजरी वरदत्तनो रे, कहो अधिकार पसायो रे, भ० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्तवन ॥

हारे मारे ठाम धरमना साडा पचवीश देश जो, दीपे रे त्यां देश मगध सहुमां शिरे रे लोल। हां रे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लोल ॥१॥ हां रे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरता त्यां आवी वीर समोसर्या रे लोल हां रे मारे चउद सहस मुनिवरनो साथे साथ जो, सुधा रे तप संयम शियले अलकर्या रे लोल ॥२॥ हां रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अंब कदंब जो, जाणु रे गुणशील वन हसी रोमांचियो रे लोल। हां रे मारे वाया वाय सुवाय तीहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लोल ॥३॥ हां रे मारे देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लोल। हां रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्ने जड्याँ रे लोल। हाँ रे मारे सुणताँ दुंदुभि नाद टले सवी ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अड्याँ रे लोल ॥५॥ हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लुंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लोल। हां रे मारे निरखी हरखी आवे जन मन लुंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे धर्मने रे लोल ॥ ६ ॥ हां रे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परिवरियो हय गय रथ पायगे रे लोल। हां रे मारे देह प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हां रे मारे त्रिभुवन नायक लायक तव भगवंत जो, आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लोल। हां रे मारे सहज विरोध विसारी जगना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लोल ॥ ८ ॥

॥ एकादशी का स्तवन ॥

समवसरण बेठा भगवंत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत। बार परषदा बेठी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षा ने केवलनाण। अरजिन दीक्षा लीधी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी ॥ २ ॥ नमिने उपज्युं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति-प्रधान। ए तिथिनी महिमा वडी, माग० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरावत इमही ज, पांच कल्याणक हुए तिमही ज। पचासनी संख्या परगडी, माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसो कल्याणक थाय तेम। कुण तिथि छे ए तिथि जे वडी, माग० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परे गणो, लाभ अनंत उपवास तणो। ए तिथि सहु शिर ए खडी, माग० ॥ ६ ॥ मौनपणे रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ। मौन तणी परे व्रत इम वडी, माग० ॥ ७ ॥ आठ पहोरी पोसह लीजिए, चौविहार विधिशुं कीजिये। पण प्रमाद न कीजे घडी, माग० ॥ ८ ॥ वर्ष इग्यार कीजे उपवास, जाव जीव पण अधिक उल्लास। ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, माग० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञानोपगरण इग्यार इग्यार। करो काउस्सग्ग गुरु-पाये पडी, माग० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र कीजिजे वली, पोथी पूजिजे मन रली। मुक्तिपुरी कीजे ढुंकडी, माग०

॥ ११ ॥ मौन अग्यारस मोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहीये सर्व । व्रत पच्चक्खाण करो आखडी, माग० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहु मन गमे । समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीश स्थानक स्तवन ॥

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलासजो, वीशरे तप स्थानक महिमा गाईशूं रे लोल ॥ हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चोवीसजो, बीजेरे सिद्ध स्थानक पन्नर भावशुं रे लोल ॥ १ ॥ हां० त्रीजे पवयणसुं गणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे आयरियाणं छत्रीसनो सहीरे लोल ॥हां०॥ थेराणं पद पंचमे दस उदारजो, छठ्ठेरे उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हां० सातमे नमोलोए सव्वसाहु सत्तावीसजो, आठमे नमो नाणस्स पंचे भावशुं रे लोल ॥ हां० नवमे दरिसण सडसठ मनने उदारजो, दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हां० अगीआरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो, बारमे नमो बंभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हां० ॥ कीरियाणं पदतेरमे वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सहीरे लो० ॥ ४ ॥ हां० पंदरमें नमो गोयमस्स अठ्ठावीसजो नमो जिणाय चउवीस गणशुं सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन

अढारमेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ओगणीसमे नमो सुअस्स वीस पीस्तालीसजो, वीसमे नमो तित्थस्स वीस भावसुंरे लो० ॥ हां० तपनो महिमा चारमें उपर वीसजो, षटमासे एक ओली पूरी कीजिएरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तप करता वली गणीये दोयहजार जो, नवकारवाली वीसे स्थानक भावसुरे लो० ॥ हां० प्रभावना संघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणां विधि कीजिए विनय लीजिएरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमां कहो श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामिनेरे लो० ॥ हां० तप करतां वली तीर्थंकर पद होयजो, देवगुरु इम कांति स्तवन सोहामणोरे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालकुमार श्वेतवर्ण अरिहंत आराधे, वीतराग आतम गुण साधे, अष्टादश मल जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध बुद्ध परमात्मा ध्यावे, रक्तवर्ण आलम्बन पावे, सिद्ध आठ गणधार ॥ श्री २ ॥ छत्तीस गुण आचारज सोहे, पीत वर्ण ध्यावे मन मोहे, स्वपर तारणहार ॥ श्री ३ ॥ पढ़े पढ़ावे योग्य बनावे, नील वरण आतम गुण गावे पाठक पद अनघार ॥ श्री ४ ॥ पचम पद को भाव से भजीए, श्याम वरण सब पाप को तजीए, धन साधु अणगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन ज्ञान चरण तप चारे, श्वेतवर्ण साधन अवधारे निश्चय और व्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गावे भावे, आतम लक्ष्मी हर्ष मनावे, वल्लभ जय जयकार ॥ श्री ७ ॥

॥ दीवाली स्तवन ॥

जयो जगस्वामी वीरजिनंद ॥ टेग ॥ नगर अपापा मैं प्रभु आये, भविजन को उपकार करंद ॥ ज० १ ॥ निज निरवान समय को जानी, सोलां पहर प्रभु धर्म कहंद ॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पंदरसको राते, प्रातः काल प्रभु मुक्ति लहंद ॥ ज० ३ ॥ परमात्मा पद छिनक में लीनो, आठ कर्म को दूर हरंद ॥ ज० ४ ॥ कल्याणक निर्वाण मोहत्सव, कारण मिलकर आये सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पापा नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां ज्ञान दिनंद ॥ ज० ६ ॥ नव मल्ली नव लेच्छी राजा, शोक अतिशय दिल में धरंद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अब जगसे, द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण दीवाली होइ, ध्यान धरोप्रभु वीर जिनंद ॥ ज० ९ ॥ कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौतम केवल ज्ञान गहंद ॥ ज० १० ॥ आतमराम परमपद पावे, वल्लभ चित्तमें हर्ष अमंद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

जात्रा नवाणु करीए, विमल गिरि जात्रा नवाणु करीए । पुर्व नवाणु वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिणंद समोसरीए ॥ वि० ॥१॥ कोटि सहस भव पातक त्रुटे, शत्रुंजय सामाडग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छट्ट दोय

अठम तपस्या, करी चढिए गिरिवरीए ॥ वि० या० ॥३॥ पुडरिक पद जपिए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए ॥ वि० या० ॥४॥पापी अभव्य न नजरे देखे हिंसक पण उद्धरीए ॥ वि० या० ॥५॥ भूमि संथारे ने नारी तणो संग, दूर थकी परि हरीए ॥वि० या० ॥६॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहरी, गुरु साथे पद चरीए ॥वि० या० ॥७॥ पडिक्कमणा दोय विधिसु करीए, पापपडल परिहरीए ॥वि० या० ॥८॥ कलिकाले ए तीर्थ मोटु, प्रवहण जेम भवदरीए ॥वि० या० ॥९॥ उत्तम ए गिरिवर सेवता पद्म कहे भव तरीए ॥ वि० या० ॥१०॥

पर्युषण पर्व की स्तुति

सत्तर भेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी ।
ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरी नाद सुणीजे जी ॥
वीर जिन आगल भावना भावी, मानव भव फल लीजे जी ।
पर्व पजुसण, पूरव पुण्ये, आव्यां एम जाणीजे जी ॥१॥
मास पास वली दसम दुवालस, चत्तारि अट्ठ कीजे जी ।
ऊपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजे जी ॥
वडा कल्पनो छट्ठ करीने, वीर वखाण सुणीजे जी ।
पडवेने दिन जन्म महोत्सव, धवल मंगल वरतीजे जी ॥२॥
आठ दिवस लगे अमर पलावी, अट्ठमनो तप कीजे जी ।
नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ भावे रहीये जी ॥

तेलाधर दिन त्रण कल्याणक, गणधरवाद वदीजे जी।
पास नेमीसर अंतर तीजे, ऋषभ चरित्र सुणीजे जी ॥३॥
बारसा सुत्र ने सामाचारी, संवच्छरी पडिक्कमिये जी।
चैत्य प्रवाडी विधिशुं कीजे, सकल जंतु खामीजे जी ॥
पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाई जी।
मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धाई जी ॥४॥

दूज तिथि की स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष। राय राणा प्रणमे, चन्द्र तणी जिहां रेख ॥ तिहां चन्द्र विमाने, शाश्वता जिनवर जेह। हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥१॥
अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतलनाथ। अरनाथ सुमति जिन, वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म ज्ञान निर्वाण। हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥२॥
परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत। जेम विमल कमल दोय, विपुल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार। बीजे सवी कीजे, पातकनो परिहार ॥३॥
गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर। चक्केसरी केसर, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजे, हुँ प्रणमुं तस पाय। एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥४॥

॥ पंचमी की स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीये, जन्म्या नेमि जिणंद तो। श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारद को चंद तो ॥

सहस वरस प्रभु आउखु ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट करम हेले हणीए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टापद पर आदि जिन ए, पहोत्या मुक्ति मोझार तो । वासु पूज्य चंपापूरी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमा वली ए, श्री वीर तणु निर्वाण तो । सम्मेतशिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥ नेमिनाथ ज्ञानी हुआ ए, भाखे सार वचनतो । जीव दया गुण वेलडी ए, कीजे तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो । अनत तीर्थंकर इम भखे ए, परिहरीये परनार तो ॥३॥ गोमेध नामे यक्ष भलो ए, देवी श्री अम्बिका नाम तो । शासन सांनिध्य जे करे ए, करे वली धर्मना काम तो ॥ तपगच्छ नायक गुणनीलो ए, श्री विजय सेन सूरिराय तो । ऋषभदास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥४॥

अष्टमी की स्तुति

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराज जी,
आठ जातिना कलश भरीने, नवरावे जिनराज जी ।
वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव करता शिव सुख साधेजी,
आठमनो तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥१॥
अष्ट करम वयरि गज गजन, अष्टापद परे बलिया जी,
आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी,
अष्टमी गति जे पहोंता जिनवर, फरस आठ नहीं अंग जी,

॥ श्री वीश स्थानक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सुरिंदा। केम निकाचे पद जिनचंदा, किणविध तप करतां भव फंदा, टले दुरितह दंदा ॥ तव भाखे प्रभुजी गत निंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा। वीश स्थानक तप कर महंदा जिम तारक समुदाये चंदा, तिम ए तप सवि इंदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहंत भणीजे, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठवीजे। उपाध्याय ने साधु ग्रहीजे नाणदंसण पद विनय वहीजे, अगियारमे चारित्र लहीजे ॥ बंभवयधारिणं गणीजे, किरियाणं तवस्स करीजे, गोयम जिणाणं लहीजे। चारित्र नाण श्रुत तित्यस्स कीजे त्रीजे भव तप करत सुणीजे, ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥ आदि 'नमो' पद सघले ठवीश, बार पन्नर वली वार छत्रीश, दश पणवीश सगवीश, । पांच ने सडसठ तेर गणीश, सित्तेर नव किरिया पचवीश, बार अट्ठावीश चोवीस ॥ सतरा एकावन पीस्तालीश पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नवकारवाली वीश। एक एक पदे उपवास ज वीश, मास छए एक ओली करीश, एम सिद्धांत जगीश॥३॥ शक्ते एकासणु तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार, पडिकमणु दोय वार। इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन भव पार, उजमणु विविध प्रकार ॥ मातंग

यत करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, नित्य सिद्धारण हार । लीमाविजय जन उपर प्यार, शुभ भविमण भर्मा आधार, वीरविजय जयकार ॥४॥

दीवाली की स्तुति

मनोहर मूर्ति महावीर तणी, जिणे सोल पहोर देशना पभणी । नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥१॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थिते । छट्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावस्या निर्मली ॥२॥ आगामी भावी भाव कह्या, दीवाली कल्पे जेह लह्या । पुण्य पाप फल अध्ययने रह्या, सवी तहत्ति करीने सद्द्या ॥३॥ सवी सुर मिली उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे । ज्ञानविमल सदगुण विस्तरे, जिनशासनमा जयकार करे ॥४॥

श्री उपधान की स्तुति ।

वीर जिनेश्वर उपदिशे ए, सांभलो भविक सुजाण तो,
उपधान विना नवि कल्पे ए, भणवो श्री नवकार तो ।
गीतारथ गुरु योगथी ए, वहीए शुद्ध उपधान तो
क्रियापासी आलोयण ए, लईये सुगुरु पास तो ॥१॥
पन मगलनु[1] आदिय ए, ए पहेलु उपधान तो;
प्रतिक्रमणनु[2] जाणीय ए, ए बीजु उपधान तो।

1 नवकार ना ५ 2 ईरियावही

चैत्य१ स्तवननुं मानीये ए, ए चोथुं उपधान तोः
सवी तीर्थंकर इम भणे ए, उपधान करो बहुमान तो ॥२॥
श्रुतस्तव२ सिद्धस्तव३ ए, छट्ठुं त्रहो उपधान तोः
शक्रस्तव४नुं जाणीये ए, धरीये तृतीय ध्यान तो ।
नाम स्तव लोगस्सनुं ए, पांचमुं शुभ उपधान तोः
श्री महानिशीथ सूत्रमां ए, भाख्युं श्री जिनराज तो ॥३॥
महा महोत्सव आदरीये ए, श्री गुरुवरनी पास तोः
नांद मंडावो ठाठसुं ए, पधरावो जिनराज तो ।
श्रीफल द्रव्य चडावीये ए, सामायिकादि सार तो,
सम्यग् दृष्टि सुरवर समी ए, देवी सिद्धायी सहाय तो ॥४॥

चैत्री पूनम की स्तुति ॥*

पुंडरीकमंडण पाय प्रणमी जे, आदीश्वर जिन चंदाजी ॥
नेमि विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढिया आणंदा जी ॥
आगममांहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी ॥
चैत्री पूनम दिन देवी चक्केसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥१॥

---

१ अरिहंत चेइयाणं० अन्नत्थ । २ पुक्खरवर । ३ सिद्धाणं-बुद्धाणं । ४ नमुत्थुणं ।

* यह स्तुति (थुई) चार वख्त भी कह सकते हैं ।

